वार्तालाप-578, सीहोर, दिनांक 30.05.08
Disc.CD No.578, dated 30.5.08 at Sehore
Extracts-Part-1

समयः 00.10-03.45

जिज्ञासुः बाबा, बाप कहते हैं मुझे जानने से तुम मेरे द्वारा सब कुछ जान जावेंगे।

बाबाः हाँ, जी। आगे? मुझे जानने से मेरे द्वारा तुम सब कुछ जान जावेंगे। आगे क्या पूछना चाहते हैं?

दूसरा जिज्ञासुः पूछ रहे हैं कैसे जान जायेंगे?

बाबाः कैसे जान जायेंगे? अच्छा, वो तो पूछ रहे हैं। तुम्हारी समझ में आ गई? क्या आ गई? बताओ। इनको बता दो। बता नहीं पाएंगे? गूँगे का गुड़ है? इसमें द्वारा लगा है ना। मुझे जानने से मेरे द्वारा तुम सब कुछ जान जावेंगे। ये द्वारा ये मीडिया कौन है? ये मीडिया कौन है? शिव ज्योतिबिन्दु मीडिया है क्या? प्रजापिता मीडिया है।

Time: 00.10-03.45
Student: Baba, the Father says: You will know everything by knowing Me through Me.
Baba: Yes. Further? You will know everything by knowing Me through Me. What do you wish to ask further?
Second student: He is asking, how will we know?
Baba: How will you know? *Accha*, He is indeed asking. Did you understand? What did you understand? Tell him. Will you not be able to tell [him]? Is it a dumb man's *gur*[1]? The word 'through' (*dwara*) is mentioned in it, isn't it? You will know everything by knowing Me through Me. Who is this 'through', this '*media*'? Who is this *media*? Is the point of light Shiva the *media*? Prajapita is the *media*.

तो प्रजापिता को जानने में माया बार-बार अडचन तो नहीं डालती है? अनिश्चयबुद्धि तो नहीं होते हैं?

जिज्ञासुः होते हैं।

बाबाः तो यही बात बताई है। मेरे द्वारा मुझे जानने से... कौन बोलने वाला है? फिर द्वारा कौन है जिस मिडीया को जानने से निश्चयात्मक बुद्धि से.... ऐसे नहीं आज जाना और कल किसी ने कान फूंक दिये और अनिश्चयबुद्धि हो गए। ऐसा होता तो है ना? होता है कि नहीं होता है? होता है। क्योंकि एवर प्योर जो है वो तो निराकार है। वो जब तक साकार न बने तब तक एवर प्योरिटी का कोई प्रूफ भी नहीं मिल सकता। कोई साबित भी नहीं कर सकता कि एवर प्योर कैसे है, एवर इम्प्योर कैसे है? हाँ, भावना बैठी हुई है कि भगवान तो एवर प्योर ही होगा। लेकिन मुसलमानों के मिसल वो अंधश्रद्धा की भावना है। जैसे मुसलमान कहते हैं - अल्लाह मियाँ ने ये फरमाया। अल्लाह मियाँ ने वो फरमाया। अब क्या आसमान में से फरमाया? अरे

[1] The expression in Hindi is: *Guunge ka gur khana*, which means to experience feelings inexpressible in words

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

फरमाएंगे तो कोई मुख से फरमाएंगे ना। अल्लाह मियाँ को निराकार ज्योति समझते हैं। नूर समझते हैं। तो कैसे फरमाएगा? बात समझ में आई?

So, doesn't Maya create obstacles repeatedly in knowing Prajapita? Don't you lose faith?
Student: We do lose.
Baba: So, this is what has been mentioned. By knowing Me through Me… Who is the speaker? Then, who is the media? By knowing that *media* with a faithful intellect (*nishcayatmak buddhi*); it is not that you know him today and tomorrow someone whispers something in your ears and you lose faith. It happens like this, does it not? Does it happen or not? It happens. It is because the ever pure one is incorporeal. Unless He becomes corporeal you cannot get any proof of His *ever purity*. Nobody can even prove that how He is *ever pure*; how He is *ever impure*. Yes, there is a faith that God must indeed be *ever pure*. But it is a blind faith (*andhashraddha*) like that of the Muslims. For example, Muslims say: *Allahmiyan* ordered this. *Allahmiyan* ordered that. Well, did He order from the sky? *Arey*, when He orders, He will order it through a mouth, will He not? They think *Allahmiyan* is an incorporeal light. They consider Him to be a light. So, how will He order? Did you understand the topic?

समयः 04.05-04.42

जिज्ञासुः बाबा, दुर्गा देवी को शेर पे क्यों दिखाया?
बाबाः हाँ, वो शेर की तरह संसार रूपी जंगल में जो दहाड़ मारता है ना, उसको कंट्रोल में कर लेती है प्यार में आ करके। शेरनी शेर को कब कंट्रोल कर पाती है? लड़ाई लड़के कंट्रोल करती है या प्यार में कंट्रोल करती है? प्यार में कंट्रोल कर लेती है। तू भी शेरनी बन जा।☺

Time: 04.05-04.42
Student: Baba, why is Durga devi shown to be sitting on a lion?
Baba: Yes, she affectionately controls the one who roars in the jungle like world like a lion. When is a lioness able to control the lion? Does she control him by fighting with him or does she control him through love? She controls him with love. Become a lioness like that.☺

समयः 04.45-07.30

जिज्ञासुः बाबा जैसे दक्ष प्रजापति ने यज्ञ रचा। तो शंकरजी को नहीं बुलाया। तो पार्वती बिन बुलाए चली गईं। तो यज्ञ को खंडित कर दिया था। तो ज्ञान में क्या टैली होता है?
बाबाः पार्वती कहाँ है? अरे यज्ञ में पार्वती कहाँ है? ये एडवांस ज्ञान में कुछ समझ में आया कि नहीं आया? कहाँ है? बी.के. में। बी.के. में जहाँ कहीं भी पार्वती है, वहाँ बी.के. वाले शंकरजी को आमंत्रण देते हैं 'आ जाओ हम तुम्हारी खातरी करेंगे'? (जिज्ञासु ने कहा - नहीं देते।) नहीं दे रहे? तो पार्वती को गुस्सा नहीं आएगा ? पार्वती को गुस्सा आता है तो देहअभिमान को स्वाहा कर देती है। आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाती है। कोई उलाहना नहीं। जब आत्मा बन जाए और देहभान को भस्म कर दे, काम, क्रोध को भस्म कर दे, सहन कर ले तो जैसे कि देह को भस्म कर दिया। प्योरिटी में रहने वाली आत्मा ही ऐसा कर सकती है या अपवित्र आत्मा ऐसा कर

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सकती है? पवित्रता की स्टेज में रहने वाली ही आत्मा ये कर सकती है। पूरा ही देहभान भस्म हो जाता है।

Time: 04.45-07.30
Student: Baba, when Daksh Prajapati organized a *yagya*, he did not call Shankarji. Then, Parvati went there without invitation. So, the *yagya* was destroyed. So, how is this tallied with the knowledge?
Baba: Where is Parvati? *Arey*, where is Parvati in the *yagya*? Did you understand anything in the advance knowledge or not? Where is she? In BK. Wherever there is Parvati in BK, do the BKs invite Shankarji [saying]: 'Come we will honour you? (Student said: They don't give). Aren't they giving? Then, will Parvati not feel angry? When Parvati becomes angry she sacrifices her body consciousness. She becomes constant in the soul conscious stage. She has no complaint (*ulahana*). When she becomes a soul and burns her body consciousness into ashes, when she burns her lust, anger into ashes when she tolerates, then it is as if she has burnt her body to ashes. Can only the soul which remains pure do this or can an impure soul do this? Only a soul living in a stage of purity can do this. The entire body consciousness is burnt into ashes.

तो फिर रुद्रगणों को गुस्सा आ जाता है। हमारी अम्मा को भस्म कर दिया? यज्ञ विध्वंस कर देते हैं। अभी एडवांस नॉलेज में चलने वालों को ऐसा एहसास होता है कि बेसिक ब्राह्मणों की दुनियां खलास होने वाली है और हमारे द्वारा खलास होगी? दुनियां में और कोई इनको ध्वंस नहीं कर सकता। शंकर और शंकर के रद्रगण जो विश्व की बादशाही लेते हैं वो ही इस स्थूल यज्ञ को खलास कर देंगे। उनका मेटेरियल यज्ञ है और हमारा ज्ञान यज्ञ है। आया समझ में?

So, then the *Rudragans* (followers of Rudra/Shankar) become angry: "You burnt our mother!" They destroy the *yagya*. Now, do those who follow the advance knowledge feel that the world of the basic Brahmins is going to end and it will end through us? Nobody else in the world can destroy them. Shankar and his *Rudragans*, who obtain the emperorship of the world, will themselves destroy this physical *yagya*. Theirs' is a *material yagya* and ours' is a *gyan yagya* (*yagya* of knowledge). Did you understand?

समयः 07.32-09.05
जिज्ञासुः बाबा, कई घर में तो प्यार से समझाया माताओं ने तब भी तो नहीं समझ पा रहे हैं ।
बाबाः माताएं?
जिज्ञासुः भाई लोग।
बाबाः भाई लोग नहीं समझ रहे? अच्छा? तो भाईयों को आप समझाते हैं?
जिज्ञासुः कई बार समझाने की कोशिश करी, समझे ही नहीं।

Time: 07.32-09.05
Student: Baba, mothers explained affectionately at many homes. Yet, they do not understand.
Baba: Mothers?
Student: The brothers.
Baba: The brothers do not understand. *Accha*. So, do you explain to the brothers?
Student: I tried explaining many times; he did not understand at all.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः अच्छा, समझाने वाला पवित्र होना चाहिए या अपवित्र होना चाहिए? पवित्र होना चाहिए। ऐसे नहीं हाथ रखा और दिल घबराने लगा। तो उसे अपवित्र कहेंगे या पवित्र कहेंगे? वो तो अपवित्र हो गया। वो क्या समझायेगा? प्रैक्टिकल में अपवित्र आत्मा पवित्र आत्माओं को ज्ञान नहीं दे सकती। इसलिए बेसिक में चलने वाले जो भी चन्द्रवंशी हैं, भल मुट्ठी भर हैं, उन आत्माओं के ऊपर एडवांस ज्ञान का कोई असर नहीं हो रहा है। पति-पत्नी के परिवार में भी ऐसे ही है। इसलिए पति लोग समझते हैं घर की मुर्गी दाल बराबर।

Baba: *Accha*, should the one who explains be pure or impure? (Everyone said: He should be pure.) He should be pure. It is not that he touches you and you[2] feel frightened. So, will such a person be called pure or impure? He has become impure; how can he explain? An impure soul cannot give knowledge to the pure souls in practice. This is why all the *Candravanshis* among those who follow basic knowledge, although they are a handful, the advance knowledge is not having any influence over those souls. It is like this in the family of a husband and a wife as well. This is why the husbands think: *ghar ki murgi daal baraabar*[3] (a thing available at home is not considered good enough when compared to the same thing available outside at a premium). ... (to be continued.)

Extracts-Part-2

समयः 09.10-11.17

जिज्ञासुः बाबा, सभी भाईयों को दुर्योधन, दुःशासन कहा गया है।

बाबाः कहा गया है? बहुत खराब बात कह दी। ☺

जिज्ञासुः मैले कपड़े के लिए पानी की आवश्यकता ज्यादा होती है।

बाबा: हाँ जी।

जिज्ञासु: तो बाबा ये दृष्टि देते समय भाईयों के हिस्से में कमी क्यों आती है?

बाबाः बाबा की?

जिज्ञासु: बाबा की।

बाबा: बाबा की दृष्टि भाईयों के प्रति इतनी नीची दृष्टि क्यों है?

दूसरा जिज्ञासुः और दूर क्यों बैठा दिया? पहले तो आधी-2 लाईन बनाके भाईयों को भी बाबा पास बिठाते थे। अब तो बाबा ने पूरा ही दूर कर दिया।

बाबाः कन्याओं माताओं को आगे-2 बैठा लेते हैं। भाईयों को कहते हैं दूर-दूर। पीछे बैठो पीछे।☺

जिज्ञासुः और दृष्टि में भी कमी कर दी है ।

बाबाः दृष्टि में बाबा की नीची दृष्टि से भाईयों को देखते हैं।

[2] If you are pure, you will confront him
[3] a chicken cooked at home is like a curry of pulses

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 09.10-11.17
Student: Baba, all the brothers have been termed Duryodhans and Dushasans[4].
Baba: Has it been said so? A very bad thing was said. ☺
Student: Dirty clothes require more water (for being washed).
Baba: Yes.
Student: So, Baba, while giving *drishti*, why is the share of brothers less?
Baba: Baba's?
Student: Baba's.
Baba: Why does Baba see the brothers with contempt?
Another Student: And why were they asked to sit far away? Earlier, the brothers were also made to sit near Baba by making them sit in a separate row [parallel to the virgins and mothers]. Now Baba has distanced [them i.e. the brothers] completely.
Baba: Virgins and mothers are made to sit in the front. Brothers are asked to sit far away. Sit at the backside.☺
Student: And they are also being given less *drishti*.
Baba: And Baba sees the brothers with contempt.

जिज्ञासुः नीची नहीं, कम देते हैं।
बाबाः वो ही नीची। कम माने क्या? ऊँची दृष्टि से देखना और नीची दृष्टि से देखना। तो दुर्योधन-दुःशासनों को नीची दृष्टि से देखते हैं या कन्याओं-माताओं को नीची दृष्टि से देखते हैं? अरे, जवाब तो देते जाओ। अच्छा बाप जो देखते हैं वो आत्मा देखते हैं या आत्मा के पार्ट को देखते हैं? (सबने कहा - आत्मा देखते हैं।) आत्मा जब देखते हैं तो जानते हैं ये सब पूर्व जन्म में दाढ़ी-मूँछ वाले पुरुष भी थे और ये भी जानते हैं ये जो पीछे बैठे हैं वो पूर्व जन्म में इनमें से ढ़ेर के ढ़ेर बिन्दी, पाउडर और 16 श्रृंगार करने वाली कन्याएं-माताएं ही थीं☺। तो बाप नीची ऊँची दृष्टि से देखते हैं या समान दृष्टि से देखते हैं? (सबने कहा - समान।) ये तो तुम्हारा देहभान हो गया।

Student: [He does] not [see them] with contempt, but [he gives them] less [*drishti*].
Baba: That is what contempt. What is meant by less? Seeing with respect and seeing with contempt. So, does He see the Duryodhans and Dushasans with contempt or does He see the virgins and mothers with contempt? *Arey*, go on replying. *Accha*, does the Father see the soul or does He see the soul's part? (Everyone said: He sees the soul.) When He sees the soul, then He knows that all these (mothers and virgins) were men with beards and moustaches too in the past birth. And He also knows that many among those sitting at the backside (the brothers) were virgins and mothers in the past birth who applied *bindi*, powder and [wore] 16 kinds of decorations. So, does the Father see [the souls] with contempt and respect or does He see [them] equally? (Everyone said: Equally.) This is your body consciousness.

समयः 11.26-13.00
जिज्ञासुः बाबा, भक्तिमार्ग में दान कर देते हैं तो उसको भूल जाते हैं और बाबा के यहाँ कन्या सरेन्डर करती हैं माताएं उसको भूलती नहीं। उसको भूलने के लिए क्या करें?

[4] Villainous characters in the epic Mahabharat

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः भूलने के लिए क्या करें?
जिज्ञासुः माताओं को याद क्यों आती है अपनी कन्याएं?
बाबाः भक्तिमार्ग में कहते हैं दान दे करके कुएं में डाल दिया।
जिज्ञासु: दान तो भूल जाते हैं लेकिन कन्या....
बाबा: हाँ, भक्तिमार्ग में क्या कहते हैं? भक्तिमार्ग में भी क्या कहते हैं? जो दिया वो कुएं में डाल दिया। फिर उसको याद भी नहीं करना है। तो ये बात कहाँ की है? भक्तिमार्ग की बातें सब कहाँ की हैं? ये भी संगमयुग की बातें हैं। कन्यादान श्रेष्ठ होता है या धन-संपत्ति और प्रापर्टी का दान श्रेष्ठ होता है? (सभी-कन्यादान।) कन्या से बड़ा रतन और कोई होता भी नहीं। हीरा भी नहीं उसके मुकाबले। हीरो पार्टधारी भी उसके मुकाबले उतना बलवान दान नहीं है। लेकिन ऐसा दान करने के बाद फिर वापस लेने का संकल्प या इच्छा करना भी महापाप पैदा कर देता है। उससे कन्या को भी आकर्षण होने लगता है। दिल से दिल को राहत होती है। यज्ञ में विघ्न आते हैं। और वो विघ्न लाने के लिए माया का रूप हम बन जाते हैं।

Time: 11.25-13.00
Student: Baba, when people give donations in the path of *bhakti* (devotion), they forget it. [But when] the mothers surrender their daughters to Baba, they do not forget them. What should they do to forget them (their daughters)?
Baba: What should they do to forget them?
Student: Why do the mothers remember their daughters?
Baba: It is said in the path of *bhakti* that you give donation and throw it[5] into the well.
Student: They forget the donation but the daughter...
Baba: Yes, what do they say in the path of *bhakti*? What do they say in the path of *bhakti* as well? Whatever you give, you should put it in the well. Then you should not even remember it. So, this pertains to which time? All the topics of the path of *bhakti* pertain to which time? These are also the topics of the Confluence Age. Is the donation of virgin (*kanyadaan*) greater or is the donation of wealth and property greater? (**Everyone**: donation of a virgin.) There is no gem greater than a virgin. She cannot be compared even with a diamond. When compared to her even the hero actor cannot be a greater donation. But even creating a thought or a desire to take such a donation back after giving it creates the greatest sin. The virgin also develops attraction due to it. The heart touches the heart. Obstacles are created in the *yagya* and we become the form of Maya to create that obstacle.

समयः 18.04-18.52
जिज्ञासुः बाबा, गीतापाठशाला का अच्छा वायब्रेशन के लिए क्या करना चाहिए?
बाबाः अच्छा वातावरण बनाने के लिए क्या करना चाहिए? अमृतवेला सुहाला कर देना चाहिए। थोक बता दिया। क्या? अमृतवेला और सेवा। ब्राह्मण अगर याद और सेवा का पार्ट पक्का बजाते रहें तो कोई विघ्न आता ही नहीं है। सब कुछ अच्छा चलेगा। ऐसे अनुभव होगा जैसे बाप कार्य करवा रहा है। मैं नहीं कर रहा हूँ। करावनहार कराय रहा है।

[5] The act and the credit

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 18.04-18.52
Student: Baba, what should we do to create a good vibration in the *gitapathshala*?
Baba: What should be done to create a good atmosphere? You should make your *amritvela* fruitful. It has been said in wholesale. What? *Amritvela* and service… If the Brahmins go on playing a firm part of remembrance and service, then no obstacle is created at all. Everything will go on well. You will feel as if the Father is enabling [us] to perform the tasks. I am not doing it. The enabler is enabling it.

समयः 20.04-23.46
जिज्ञासुः बाबा, भक्तिमार्ग में लक्ष्मी की सवारी उल्लू बताया। इसका कारण क्या?
बाबाः उल्लू उसे कहते हैं जिसे अपनी भाषा में हम लोग चमगादड़ कहते हैं। बाबा मुरली में उल्लू किसे बताते हैं? चमगादड़, जो नीचे की ओर मुँह करके पृथ्वी की ओर, ज़मीन के ऊपर मिट्टी की तरफ बुद्धि करके लटका रहता है। बाबा उसको उल्लू कहते हैं। उल्लू का मतलब ये हुआ कि जितने भी दुनियां के पैसा कमाने वाले बड़े-बड़े लोग हैं, छोटे लोगों में भी ऐसे हैं जिनकी बुद्धि सुबह से लेके शाम तक बिजनेस में ही लगी रहती है। दुनियांवी बिजनेस। देह और देह के संबंधियों को पालन-पोषण करने में इतनी बुद्धि बिज़ी हुई पड़ी है कि उल्लू मिसल बन पड़े हैं। उनकी बुद्धि कहाँ लगी रहती है? मिट्टी में। ये देह काहे से बनती है? मिट्टी से। ऐसे बड़े-बड़े धनवान, जो मिट्टी से धन कमाने वाले हैं, विनाशी धन, उनके ऊपर लक्ष्मी सवार हो करके कार्य करती है। उनकी सवारी बनाती है और अपना घर परिवार संभालती है।

Time: 20.04-23.46
Student: Baba, in the path of *bhakti* Lakshmi is shown riding on an owl (*ullu*). What is the reason for that?
Baba: Owl is the one whom we call a bat in our language. Whom does Baba mention as owl in the murlis? The bat, who hangs with his mouth facing downwards, towards the earth, who hangs with his intellect towards the soil on the earth. Baba calls it an owl. The owl means all the big personalities of the world who earn money; there are also such ones among the less prosperous ones whose intellect is busy only in *business* from morning till evening. [It is busy in] the worldly *business*. The intellect is so busy in sustaining the body and the bodily relatives that they have become like owls. Where is their intellect engaged? In the soil. How is this body formed? [It is formed] with soil. Lakshmi works by riding on such big prosperous people who earn wealth, perishable wealth from soil. She makes them her vehicle and takes care of her family.

ऐसी लक्ष्मी ब्राह्मणों की बेसिक दुनियां में है या एडवाँस की दुनियां में है? बेसिक की दुनियां में है। बहुत पैसा कमा रही है। जितना धन संपत्ति का आगार उस ब्रह्माकुमारी के पास है उतना कोई ब्रह्माकुमारी के पास नहीं है। उल्लुओं के ऊपर सवारी करके बैठी हुई है। एडवांस पार्टी में जब आवेगी, तो उन उल्लुओं के ऊपर सवार हो करके आवेगी या शेर के ऊपर सवारी करके आवेगी? अरे? उन उल्लुओं के ऊपर ही सवारी करके आवेगी। बाद में फिर जब पार लगाने का कार्य करती है एडवांस नालेज ले करके, तब सिंहवाहिनी कही जाती है क्योंकि शेर सिर्फ प्यार से

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ही कंट्रोल (में) आता है। और कोई तौर-तरीका नहीं है उस शेर को कंट्रोल करने का। उल्लुओं के ऊपर तो ऐसे ही बुद्धू बनाके सवारी कर लो।

Is such a Lakshmi in the basic world of the Brahmins or is she in the world of the advance [knowledge]? She is in the world of the basic [knowledge]. She is earning a lot of money. No Brahmakumari has as much treasury of wealth as that Brahmakumari has. She is riding on the owls. When she comes to the advance party, then will she come riding on those owls or will she come riding on a lion? *Arey*? She will come riding on those very owls. Later on, when she performs the task of taking [everyone] across after obtaining the advance knowledge, then she is called *Singhvahini*[6]. It is because a lion can be brought under control only with love. There is no other way to control that lion. You can ride on the owls simply by making them a fool. ... (to be continued.)

Extracts-Part-3

समयः 23.50-26.24

जिज्ञासुः बाबा, महाभारत में भीष्म पितामह को युद्ध में कांटों की शैया पर लेटा दिखाया गया है।

बाबाः हाँ,जी।

जिज्ञासुः और सीढ़ी के चित्र में राम वाली आत्मा को। बाबा, इसमें क्या डिफरेंस है?

बाबाः दुनियां की ऐसी कोई बात नहीं जो तेरे ऊपर लागू न होती हो। वो सन्यासियों का बाप नहीं है क्या?

जिज्ञासु: है।

बाबा: है फिर क्या बात?

जिज्ञासुः बाबा, फिर भीष्म पितामह का पार्ट किसका है बाबा?

बाबाः भीष्म माना भयंकर। पितामह माना बापों का बाप। भीष्म पितामह अर्जुन से क्या कहते थे? अर्जुन बच्चे के रूप में उनकी गोद में आता था तातश्री, तातश्री, तातश्री। तो वो कहते मैं तुम्हारा तातश्री नहीं हूँ मैं तुम्हारे तात का तात हूँ। तुम बार-2 भुल क्यों जाते हो? बापों का बाप हूँ।

जिज्ञासु: तो बाबा उन्होंने कौरवों का साथ क्यों दिया?

बाबा: क्यों? जो सारे जगत का पिता है जब देखता है कि विदेशी बाप को प्रत्यक्ष करते हैं स्वदेशी प्रत्यक्ष नहीं करते हैं। तो किसका साथ देगा? बाप किन बच्चों को प्यार करते हैं? जो बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा करते हैं उन बच्चों को ज्यादा प्यार करते हैं। इसीलिए भारत (के) दो हिस्से कर दिए। एक दक्षिण भारत और एक उत्तर भारत। उत्तर भारत हो गया राम-कृष्ण की जन्म भूमी भारत। और भगवान चक्कर इस समय लगाता है दक्षिण भारत में या उत्तर भारत में? (सभी ने कहा: दक्षिण भारत में।) भगवान को प्रत्यक्ष करने का काम पहले-2 कौनसे बच्चे करते हैं? विदेशी बच्चे करते हैं। इसीलिए प्रजापिता को या शंकर को शास्त्रों में

[6] A female deity who rides on the lion

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दिखाया गया है कि असुरों को भी कल्याण करता है और देवताओं का भी कल्याण करता है। लेकिन विष्णू को सिर्फ देवताओं का कल्याण करते हुए दिखाया गया।

Time: 23.50-26.24
Student: Baba, Bhishma Pitamah has been shown to be lying on a bed of thorns in the battlefield in Mahabharata.
Baba: Yes.
Student: And in the picture of the ladder the soul of Ram has been depicted [lying on a bed of thorns]. Baba, what is the difference between them?
Baba: There is nothing in this world which is not applicable to you. Is he not the father of the *sanyasis*?
Student: He is.
Baba: He is, then what is the matter?
Student: Baba, then who plays the part of Bhishma Pitamah Baba?
Baba: *Bhishma* means fearsome. *Pitamah* means the father of the fathers. What did Bhishma Pitamah use to tell Arjun? Arjun used to come in his lap in his childhood [saying:] *Tatshri*[7], *Tatshri*, *Tatshri*. Then he used to say: I am not your *Tatshri*; I am your elder father's elder father (*Tat ka tat*). Why do you forget it repeatedly? I am the father of the fathers.
Student: So Baba, why did he support the Kauravas?
Baba: Why? The one who is the father of the entire world... When he observes that the *videshis*[8] reveal the father, the *swadeshis*[9]don't reveal [him], then whom will he support? Whom does the father love? Those who do the service of revealing the father he loves them more. This is why Bharat (India) was divided into two parts. One is south India and the other is north India. The north India is the birth place of Ram-Krishna i.e. Bharat. And does God tour in south India or north India at this time? (Everyone said: in south India.) Which children do the task of revealing the father first? The foreign children. This is why Prajapita or Shankar is shown in the scriptures that he brings benefit to the demons as well as to the deities. But Vishnu is shown bringing benefit just to the deities.

समयः 27.18-29.51
जिज्ञासुः शंकर के माथे पर अष्ट देवों को दिखाया है।
बाबाः हाँ, जी।
जिज्ञासुः उसके ऊपर गंगा को दिखाया है।
बाबाः उसके ऊपर नहीं दिखाया। उनके बीच में दिखाया गया है।
जिज्ञासुः माना गंगा का कनेक्शन उनसे ही होगा या फिर...।
बाबाः गंगा निकलती है तो अष्ट देव भी प्रत्यक्ष होते हैं। ज्ञान गंगा नहीं निकलेगी तो अष्ट देव भी प्रत्यक्ष नहीं होंगे। इसलिए बोला है: अभी अष्ट देवों में से दो ही प्रत्यक्ष हुए हैं। दो सीट प्रत्यक्ष हुई हैं। बाकी छह अभी प्रत्यक्ष नहीं हुए हैं। इसीलिए लेट का बोर्ड लगा है लेकिन टू लेट का बोर्ड अभी भी नहीं लगा है।

[7] elder brother of father; uncle
[8] foreigners
[9] belonging to one's own country

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 27.18-29.51
Student: Eight deities have been shown on the forehead of Shankar.
Baba: Yes.
Student: Ganga has been shown above them.
Baba: She has not been shown above them. She has been shown in their midst.
Student: So, does it mean that Ganga will have a connection only with them or...
Baba: When Ganga emerges, the eight deities are also revealed. If the Ganga of knowledge does not emerge then the eight deities will not be revealed either. This is why it has been said: Now only two of the eight deities have been revealed. Two seats have been revealed. The remaining six have not yet revealed. This is why the board of 'late' has been displayed, but the board of 'too late' has not been displayed yet.

जिज्ञासुः ज्ञान गंगा तो अंत में निकलेगी ना।
बाबाः अंत में निकलेगी तब अंतिम प्रत्यक्षता होगी आठ की। अभी तो सिर्फ इशारा मात्र दे दिया। अभी आठ की परीक्षा कहाँ हुई है? जो बाप की परीक्षा होती है वो बाप की परीक्षा बच्चों की भी परीक्षा होती है - नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।
जिज्ञासुः दो को छोड़ के बाकी की परीक्षा होनी है या?
बाबाः दो को छोड़ के क्यों? उनमें एक की तो पहले से ही परीक्षा हो रही है। सारा जीवन ही परीक्षा का है। भीष्म पितामह के जीवन में परीक्षा नहीं रहती है क्या? परीक्षा ही परीक्षा है।
जिज्ञासुः बाबा नंबर डिक्लेयर होने का आधार क्या होगा?
बाबाः नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा।

Student: The Ganga of knowledge will emerge in the end, won't she?
Baba: She will emerge in the end. Then the final revelation of the eight will take place. Now just a hint was given. The examination of eight hasn't taken place yet. The Father's children also undergo the same test number wise as per their *purusharth* that the Father underwent.
Student: Are the rest except the two going to be tested or?
Baba: Why except two? Among them the examination of one is already taking place. His entire life is full of tests. Are there no exams in the life of Bhishma Pitamah? There are exams and only exams.
Student: Baba, what is the basis of the number (rank) being declared?
Baba: *Nashtomoha smritilabdha*[10].

जिज्ञासुः तो वो पेपर उनका हो चुका ना।
बाबाः किसका?
जिज्ञासुः जो दो डिक्लेयर हुए हैं।
बाबाः अरे दूसरा तो अभी डिक्लेयर हुआ है।
जिज्ञासुः हाँ, वो ही।
बाबाः वो ही?
जिज्ञासुः उनका तो पेपर हो चुका ना।

[10] the stage of conquering all kinds of attachments and remaining in the remembrance of the one Father

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः काहे का? नंबर डिक्लेयर होने से पेपर हो जाता है? सन् 76 में बाप का नंबर डिक्लेयर हो गया तो पेपर पूरा हो गया? पेपर फाईनल सबका एक साथ होगा या आगे पीछे होगा? (किसी ने कहा - एक साथ।) सबका फाइनल पेपर एक साथ होगा।

Student: So, they have already undergone the examination, haven't they?
Baba: Who?
Student: The two who have been declared.
Baba: The second one has been declared now.
Student: Yes, that one.
Baba: That one?
Student: That one has already undergone the examination, hasn't he?
Baba: Which one? Does someone finish giving the examination just if his number is declared? Did the examination get over when the Father's number was declared in 76? Will everyone undergo the final examination simultaneously or will they undergo it one after the other? (Someone said: simultaneously.) Everybody will undergo the *final* examination simultaneously.

समयः 34.12-37.28

जिज्ञासुः बाबा, कल्प वृक्ष के चित्र में बताया है दस धर्मों के दस आधारमूर्त आत्माएं हैं। वो तो बेसिक से निकलती हैं। और दस बीज जो हैं एडवांस से निकलते हैं। और जो शाखाएं हैं बाबा वो कौन हैं?

बाबाः दुनियां में। धर्मपिताएं। वो धर्मपिताएं अभी ब्राह्मणों की दुनियां में मौजूद हैं या नहीं हैं? अरे अभी झाड़ छोटा है या बड़ा है? (किसी ने कहा - छोटा है।) छोटा है। तो छोटे में शाखाएं कहाँ से आ जाएंगी? अभी तो तना भी तैयार नहीं हुआ है देवी-देवता सनातन धर्म का। फाउन्डेशन पड़ रहा है नई दुनियां का। तो वो तने इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन्स के जो बाप हैं, वो अभी ब्राह्मणों की दुनियां में दिखाई पड़ते हैं? दिखाई पड़ते हैं? नहीं। वो गुप्त हैं।

Time: 34.12-37.28
Student: Baba it has been mentioned in the picture of the Kalpa Tree that there are ten root (*aadhaarmoort*) souls of ten religions. They emerge from the basic [knowledge] and the ten seeds emerge from the advance [knowledge]. And Baba, who are the branches?
Baba: [They are] in the world, the religious fathers. Are those religious fathers present in the world of Brahmins now or not? *Arey*, is the tree small now or is it big? (Someone said: it is small.) It is small; so how will the branches emerge in a small [tree]? Not even the stem of the Deity religion has developed yet. The foundation of the new world is being laid. So, is the stem, the father of the people of Islam, the Buddhists, the Christians visible in the world of Brahmins or not? Are they visible? No. They are hidden.

बड़ा झाड़ अभी निकलेगा। सारे संसार में एक-एक पत्ते को बाप का परिचय मिलेगा। सारी दुनियां उस बाप को पहचानेगी। जो नास्तिक आत्माएं हैं बिल्कुल नास्तिक, न आत्मा को मानती, न परमात्मा बाप को मानती, न स्वर्ग को मानती, न नर्क को मानती। इतना अहंकार भरा हुआ है हम ही सब कुछ हैं। हम जो चाहें सो कर सकते हैं। एटम बम्ब बना के दुनियां को

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ध्वंस कर सकते हैं। अभी-अभी चाहें तो अभी-अभी कर दें। ऐसे परमात्मा बाप को न मानने वाले अहंकारी भी अंत में कहेंगे - ओ गॉड फादर। गॉड फादर इज़ ट्रुथ। भगवान एक ही सच्चा है। और वो इस सृष्टि पर आया हुआ है। मानेंगे। एडम को, आदम को स्वीकार करेंगे। अभी झाड़ बड़ा कहाँ हुआ है? अभी तूफान लगते रहते हैं या नहीं लगते? छोटे झाड़ को तूफान ज्यादा लगते हैं या जब जड़ें गहरी पकड़ जाता है तो तूफान ज्यादा लगते हैं? छोटे झाड़ को तूफान जयादा लगते हैं। अभी माया प्रबल है, तूफान लाने वाली। अभी बाप प्रबल नहीं है, मनुष्य सृष्टि का बाप। शिव बाप की तो बात ही नहीं। मनुष्य सृष्टि का बाप जब प्रबल हो जावेगा तो हाई जम्प लगाकर के बैल के ऊपर सवारी कर लेगा। अभी तो बैल अपना काम करता है। (किसी ने कहा - बैल खुला घूम रहा है।) हाँ, अभी नाथ नहीं पड़ी है।

The big tree will emerge now. Every leaf in the entire world will get the introduction of the Father. The entire world will recognize that Father. The atheist souls, who are completely atheist, those who do not believe in either the soul or the Supreme Soul Father, who do not believe in either heaven or hell; they are so egotistic [that they think:] "We ourselves are everything. We can do whatever we wish. We can create atom bombs and destroy the world. We can do it now itself if we wish to"; even such egotistic people who do not accept the Supreme Soul Father will say in the end: O *God Father*! *God Father is truth*. God alone is true. And He has come in this world. They will accept [this]. They will accept Adam, Aadam. The tree has not become big now. Does it face storms now or not? Does a small tree face more storms or does a tree face more storms when its roots have penetrated deep? A small tree faces more storms. Now Maya who brings storms is strong. Now the father, the father of the human world is not strong. It is not the question of Father Shiva at all. When the father of the human world becomes strong, then he will take a high jump and ride on the bull. Now the bull performs its task. (Someone said: The bull is roaming free.) Yes, it has not yet been controlled. ... (to be continued.)

Extracts-Part-4

समयः 37.35-38.44

जिज्ञासुः बाबा, जब रूद्र यज्ञ रचते हैं तो उसमें लंगोटी पहनते हैं।

बाबाः हाँ, जी। लंगोटी पहनने का मतलब है नंगे हो जाते हैं। आत्मा बन करके यज्ञ करते हैं। आत्मा-आत्मा भाई-भाई समझ करके जब हम ज्ञान यज्ञ रचेंगे तो उसका असर ज्यादा होगा या देहभान में आ करके दूसरों को ज्ञान देंगे तो उसका असर ज्यादा होगा? (सबने कहा - आत्मा।) ये रुद्र ज्ञान यज्ञ इसका नाम है।

जिज्ञासुः माताओं-कन्याओं को नहीं बैठाते।

बाबाः माताओं-कन्याओं में देहभान ज्यादा होता है या पुरुषों में देहभान ज्यादा होता है? माताएं कन्याओं को कहो रुद्र ज्ञान यज्ञ में लंगोट बांध के बैठो। बैठेंगी क्या? (किसीने कहा - नहीं।) स्त्री जाति में देहभान, देह का ओना होता है। शुकर करो पुरुष का जन्म मिला है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 37.35-38.44
Student: Baba, when *Rudra yagya* is organized, people wear a *langoti* (loin cloth)
Baba: Yes. Wearing *langoti* means they become naked. They become souls and perform the *yagya*. Will the *yagya* of knowledge have more effect when we organize it while considering the souls to be brothers [among themselves] or will it have more effect if we give knowledge to others in body consciousness? (Everyone said: soul.) Its name is *Rudra Gyan Yagya* (the *yagya* of knowledge of Rudra).
Student: Mothers and virgins are not allowed to sit there.
Baba: Do the mothers and virgins have more body consciousness or do the men have more body consciousness? If you ask the mothers and virgins to sit wearing a *langoti* in the *Rudra Gyan Yagya*, will they sit? (Someone said: No.) Womenfolk have [more] body consciousness; they are [more] conscious of their body. You should be thankful that you have received the birth of a man.

समयः 40.53-45.29

जिज्ञासुः बाबा, मन-बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। तो जब आत्मा किसी दूसरे में प्रवेश करती है तो वो इतनी सूक्ष्म है कि दिखती नहीं है।

बाबाः मन-बुद्धि थोड़े ही दिखाई पड़ेगी?

जिज्ञासुः हाँ, वो ही। तो जब आत्मा किसी दूसरे में प्रवेश करती है तो अपनी स्मृति को वहाँ टिकाने की बात है या स्थूल रूप में प्रवेशता ? जैसे हम बिन्दी की कल्पना करते हैं।

बाबाः अरे शरीर छोड़ करके ज्योति बिन्दू गर्भ में प्रवेश कर जाता है।

जिज्ञासुः नहीं बाबा, शरीर रहते-रहते।

बाबाः शरीर रहते-रहते क्या?

जिज्ञासुः शरीर रहते हुए कोई आत्मा, जैसे बोला है कि तुम बच्चे दूसरों में प्रवेश करके पार्ट बजाएंगे, तो वो जब स्टेज होती है।

बाबाः वो स्टेज तो ऐसी स्टेज होगी जिसमें देह का भान ही नहीं रहेगा। जब चाहें तब हम मन बुद्धि को देह से बिल्कुल डिटैच कर लें।

Time: 40.53-45.29
Student: Baba, the mind and the intellect itself is called a soul. So, when a soul enters someone else, then it is so subtle that it is not visible.
Baba: The mind and intellect will not be visible.
Student: Yes, that is correct. So, when a soul enters someone else, then is it about making our mind constant [there] or is it about entering physically? For example, we imagine a point [i.e. soul].
Baba: *Arey*, the point of light leaves the body and enters the womb.
Student: No, Baba, while being in a body.
Baba: While being in the body?
Student: A soul, while being in its body… For example it has been said that you children will enter others and play a part; so, when we develop that stage….
Baba: That stage will be a stage in which there will not be the consciousness of the body at all. We will be able to detach the mind and intellect from the body completely whenever we wish.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

उस समय भूख और प्यास की भी परवाह नहीं रहेगी। अभी तो भूख लगती है तो आत्मा कुलबुलाने लगती है। जब वो सम्पूर्ण स्टेज आवेगी तो आत्मा को ये भी परवाह नहीं रहेगी कि भोजन मिले, पानी मिले। नहीं। किसी भी प्रकार के भोग से इन्द्रियाँ तृप्त हो जावेंगी।

जिज्ञासुः बाबा आत्मा तो दिखती नहीं है, लेकिन अपनी स्मृति को अगर किसी में टिकाती हैं....

बाबाः हाँ, हाँ, तो लगातार टिकने की प्रैक्टिस होनी चाहिए ना। बार-बार घड़ी-घड़ी देह में आ जाने की प्रैक्टिस न हो ना।

जिज्ञासुः बाबा जो बिन्दी की कल्पना करते हैं ...

बाबाः कल्पना? है नहीं बिन्दी?

जिज्ञासुः माना कोई ऐसे जो दिखती नहीं है।

बाबाः अरे, जो चीज़ आँखों से दिखती है उसी को मानना है? जो आँखों से नहीं दिखती है उसको नहीं मानना है? मलेरिया का कीटाणु आँखों से नहीं दिखता है। डॉक्टर लोग उसे माइक्रोस्कोप से देख लेते हैं। तो जब तक आप माइक्रोस्कोप में नहीं देखेंगे तब तक नहीं मानेंगे क्या? उसको कल्पना मानेंगे? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) माना बुद्धि में अभी ये बात बैठी नहीं है आत्मा अलग से कोई चीज़ है।

Baba: At that time we will not care for hunger and thirst either. Now, when we feel hungry, the soul becomes restless. When we achieve that complete stage, then the soul will not even care for food or water. No. The organs will be contented with any kind of pleasure.
Student: The soul is not visible but if we make our mind constant in someone....
Baba: Yes, so we should have the practice of becoming constant continuously, shouldn't we? There should not be the practice of becoming body conscious again and again.
Student: Baba, the point that we imagine...
Baba: Imagination? Doesn't a point exit?
Student: I mean to say [it is] something which is not visible.
Baba: *Arey*! Do we have to believe only the thing that is visible to the eyes? Don't we have to believe the thing that is not visible to the eyes? The germs of malaria are not visible to the eyes. Doctors see them through a microscope. So, will you not believe until you see it through the microscope? Will you consider it to be an imagination? (Student said something.) It means this topic hasn't sat in the intellect yet that there is anything like a soul.

जिज्ञासुः नहीं, ये नहीं बाबा। जैसे मन बुद्धि कहते हैं ना। तो मन-बुद्धि कोई ऐसे बिन्दी स्वरूप है क्या?

बाबाः मन, बुद्धि और संस्कार। सिर्फ मन बुद्धि नहीं। मन, बुद्धि में जन्म-जनमान्तर के किये हुए कर्मों का जो असर बैठ गया है, प्रभाव बैठ गया है, वो संस्कार भी आत्मा में मौज़ूद है, जन्म-जन्मान्तर के। अच्छे संस्कार भी हैं और बुरे संस्कार भी हैं। उसको आत्मा कहा जाता है। अभी तमोप्रधान आत्मा बन गई है तो उसकी ज्योति उझियाय गई है। जैसे बैटरी डिस्चार्ज हो गई है। जब आत्मा रूपी बैटरी पूरी चार्ज हो जावेगी तो उस देह से डिटैच हो जावेगी। जब चाहें हम शरीर में प्रवेश करें और जब चाहें प्रवेश न करके कोई में भी प्रवेश करके जो भी काम करना है

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

वो करके वापस आ जाएं। नहीं तो इन एटम बम बनाने वालों में इतनी ताकत नहीं है, इतनी दम-डकार नहीं है जो अपनी बनाई हुई चीज़ को अपनी रचना को इस्तमाल कर सकें। डर रहे हैं। सत्तर साल हो गए हैं एटमिक एनर्जी तैयार हुए। ये हम पावरफुल आत्माओं की बात है। शंकर समान स्टेज में स्थित होने वाली आत्माओं की बात है कि वो दूसरों के शरीर में प्रवेश करेंगी और जो संकल्प उनके अंदर पक्का करना होगा, करेंगी और वापस आ जाएंगी।

Student: No, it is not so Baba. For example we say, the mind and intellect, don't we? So, is the mind and intellect like a point?
Baba: The mind, the intellect and the *sanskars*. Not just the mind and the intellect. The effect, the influence of the actions performed in many births that has sat in the mind and the intellect, those *sanskars* of many births are also present in the soul. There are good as well as bad *sanskars*. That is called a soul. Now the soul has become *tamopradhan*; so, its light has dimmed. It is as if the battery has become discharged. When the battery like soul becomes fully charged, then it will be detached from the body. We will be able to enter the body whenever we wish and not when we don't wish, we will be able to enter anyone and come back after performing our task. Otherwise, those who prepare the atom bombs do not have this much power, this much courage that they use the thing which they have prepared, which they have created. They fear. It has been seventy years since the *atomic energy* was prepared. It is about us *powerful* souls. It is about the souls which become constant in a stage like that of Shankar that they will enter others' bodies and will enable them to make a resolution firm and come back. ... (to be continued.)

Extracts-Part-5

समयः 48.03-52.23

जिज्ञासुः बाबा, बोला है कर्मों में फालो करना है ब्रह्मा को और बात एक की माननी है। दोनों में अंतर क्या है?

बाबाः कौनसे ब्रह्मा को फालो करना है?

जिज्ञासुः दादा लेखराज को।

बाबाः हाँ, जी। और बाप कौन है?

जिज्ञासुः प्रजापिता।

बाबाः फिर क्या बात हो गई?

जिज्ञासुः अंतर क्या है? उनको तो देखा नहीं तो कर्मों में फालो...

बाबाः उनको देखा नहीं है तो क्या पढ़ा नहीं है? मुरलियां नहीं सुनी हैं? उनकी हिस्ट्री जानते नहीं हैं क्या? कोई आदमी को देखा नहीं है, महात्मा गांधी को देखा नहीं है, लेकिन महात्मा गांधी को फालो करने वाले लोग तो दुनियां में हैं या नहीं हैं? हैं। तो ऐसे ही हमने ब्रह्मा को देखा भले नहीं है लेकिन उन्होंने ऐसे कर्म जो किये सहनशीलता के वो सहनशीलता का पार्ट हम नहीं बजाय सकते क्या? बाप तो सहनशील नहीं है। बाप के साथ पार्ट बजाने वाली जो जगदम्बा है, वो भी रुद्रमाला का मणका है, वो भी सहनशील नहीं है। तो कर्मों में उनको फालो नहीं करना

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

है। फायदा नहीं होगा। क्योंकि जो शक्तिशाली होता है, वो तो कोई भी काम करे उसके ऊपर कोई असर नहीं होता।

Time: 48.03-52.23
Student: Baba, it is said: we have to follow Brahma in actions and have to listen to one. What is the difference between both of them?
Baba: Which Brahma are you supposed to follow?
Student: Dada Lekhraj.
Baba: Yes. And who is the Father?
Student: Prajapita.
Baba: Then what is the matter?
Student: What is the difference? We haven't seen him; so how will we follow him in actions?
Baba: You have not seen him, [but] have you not read [about him]? Have you not heard the murlis? Don't you know his history? If you haven't seen a person... [People] haven't seen Mahatma Gandhi, but are there the people who follow him in the world or not? There are. So, similarly, although we have not seen Brahma, the actions of tolerance that he performed, can't we play that part of tolerance? The father is not tolerant. Jagdamba, who plays a part with the father, is also a bead of the Rudramala (the rosary of Rudra). She is not tolerant either. So, you should not follow them in actions. There will not be any benefit because the one who is powerful will not be affected by any action that he performs.

समरथ को नहीं दोष गोसांई, रवि पावक जल समकी नाई। सूर्य तो पावरफुल है। टट्टी पेशाब को भी खा जाता है। उसको नीच कोई नहीं कहेगा। अग्नि का भी यही हाल है। जल का भी यही हाल है। इसलिए भक्तिमार्ग में कहावत है: सद्गुरु को या गुरु को कर्मों में फालो नहीं करना है। जैसे कर्म गुरु करता है वैसे कर्म चेले को नहीं करने हैं। फालोवर को नहीं करने हैं। नहीं तो उल्टा लटक जावेगा। गुरु जो कहे सो करना है। तो प्रजापिता और दादा लेखराज ब्रह्मा इन दोनों के बीच में कर्मों के आधार पर किसको फालो करना है? दादा लेखराज को कर्मों के आधार पर फालो करना है। और वाणी के डायरेक्शन में किसको फालो करना है? बाप को फालो करना है। बाप के कर्मों को अगर फालो करेंगे तो उल्लू की तरह उल्टे लटक जावेंगे। मध्यप्रदेश में बहुत कुछ ऐसा हो रहा है। उड़ीसा और बिहार में भी बहुत कुछ हुआ। उल्टे लटक गए। इसलिए मुरली में बोला है - शंकर को फालो नहीं करना है। काहे में? कर्मों में। शंकर का काम शंकर को करने दो। तुम अपना काम करो। तुम ब्रह्माकुमार हो। तुम अपने टाइटिल में लिखते हो - प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारी। शंकर तो नहीं लिखता होगा। लिखता होगा पी.बी.के? लिखेगा? वो तो नहीं लिखेगा।

Samrath ko nahi dosh gosain, ravi paavak jal samki nai.[11] The Sun is *powerful*. It eats (i.e. dries) even faeces and urine. Nobody will call it degraded. Same is the case with fire. Same is the case with water. This is why there is a saying in the path of *bhakti*: You should not follow *sadguru* or *guru* in actions. A disciple, follower should not perform actions as his *guru* does. Otherwise, he will hang upside down. You have to do what the *guru* says. So, whom should you follow on the

[11] The one who is capable is not blamed just as the Sun, fire and water

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

basis of actions among Prajapita and Dada Lekhraj? You have to follow Dada Lekhraj on the basis of actions. And whose oral directions should you follow? The [directions] of the father should be followed. If you follow the father in actions, you will hang upside down like an owl (i.e. bat). A lot of such things are happening in Madhya Pradesh (a state in India). Many such things happened in Orissa and Bihar[12] as well. They hung upside down. This is why it has been said in the murli: You should not follow Shankar. In what? In actions. Let Shankar do his work. Do your job. You are a Brahmakumar. You write: Prajapita Brahmakumar kumari as your title. Shankar must not be writing this. Must he be writing PBK? Will he write? He will not write.

समयः 52.34-54.58

जिज्ञासुः बाबा, इस ज्ञान को लेके पंडित लोग ही क्यों झगड़ते हैं? उनकी बुद्धि में क्यों नहीं बैठता?

बाबाः उन्हें शास्त्रों के ज्ञान का अहंकार जब तक है, तब तक झगड़ा करते हैं। जब शास्त्रों के आधार पर हम ईश्वरीय ज्ञान को उनको समझाने लायक बन जावेंगे अथवा प्योरिटी में उनके समान बन जावेंगे, दोनों बातों में से एक बात भी हो जावेगी तो फिर वो झुक जावेंगे। अभी प्योरिटी की पावर भी उतनी नहीं है जितनी दुनियांवी ब्राह्मणों में है और शास्त्रों को क्लेरिफाय करने की भी ज्ञान इतनी की पावर नहीं है, जो उनको कन्विन्स कर सकें।

जिज्ञासुः बाबा शास्त्रों की बात को नहीं मानते।

बाबाः शास्त्रों को बात को नहीं मानते?

जिज्ञासुः ... क्लेरिफिकेशन देते हैं या उदाहरण देते हैं....

बाबाः तो दे ही नहीं पाते। अगर शास्त्रों के एक-एक बात का क्लेरिफिकेशन उनको दिया जाएगा, तो क्यों नहीं मानेंगे?

Time: 52.34-54.58

Student: Baba, why do only the pundits (worldly Brahmins/Hindu priests) quarrel about this knowledge? Why does it not sit in their intellect?

Baba: As long as they have ego of their knowledge of scriptures, they quarrel. When we become capable of explaining the Divine knowledge to them on the basis of the scriptures or when we become equal to them in purity, when we become [complete] in either of these, then they will bow. Now we do not have as much power of purity as the worldly Brahmins have. And we do not have much power of knowledge to clarify the scriptures either, so that we are able to *convince* them.

Student: Baba they do not accept the topics of the scriptures.

Baba: They don't accept the topics of the scriptures?

Student: .... We give clarifications or examples....

Baba: So, you are unable to give it (clarification) at all. If the clarification of each and every topic of the scriptures is given to them, why will they not accept?

[12] Orissa and Bihar are states of India

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः जैसे हमारे यहाँ ब्राह्मण लोग हैं, वो बिल्कुल नहीं मानते।
बाबाः आपको गीता दे दी जाए। यज्ञ के आदि में गीता थी। वो ही पुरानी गीता पढ़ करके सुनाते थे। अर्थ करके बताते थे। आप गीता के अनुसार उनको समझायेंगे?
जिज्ञासुः जी बाबा समझाते हैं...।
बाबाः एक-एक बात का अर्थ बताना पड़े।
जिज्ञासुः वो नहीं समझते, कितना भी समझाओ।
बाबाः ये कहो समझाने वाले नहीं समझदार होते हैं तो नहीं समझते।
जिज्ञासुः बाबा .... वो सुनने के लिए तैयार ही नहीं होते।
बाबाः अपने अंदर की प्योरिटी की पावर और ज्ञान की पावर को हम देखें। दूसरे के ऊपर अंगुली न उठाएं। अगर दुनियां नहीं समझती है तो हमारी कमजोरी है या दुनियां की कमजोरी को हम देखें? हमारी अपनी कमजोरी है।
जिज्ञासुः ऐसा कैसा ज्ञान सुनाते रहते हो अभी तो कलियुग लगा ही नहीं है। शुरू ही नहीं हुआ।
बाबाः उनसे प्रश्न किया जाए कि सत्तर साल पहले तो ये एटम बाम्ब नहीं बने थे। अब कैसे बन गए? उनका मुँह बंद हो जाता है। जो प्रश्न जहाँ करना है वहीं करना है।

Student: For example, there are Brahmins in our place; they do not accept at all.
Baba: If you are given the Gita; there was Gita in the beginning of the *yagya*. The same old Gita used to be read, it used to be clarified. Will you explain to them according to the Gita?
Student: Yes Baba, we explain [to them].
Baba: You will have to explain the meaning of each and every topic.
Student: However much we explain [to them], they do not understand.
Baba: Say that the ones who explain are not intelligent; this is why they (the pundits) are unable to understand.
Student: Baba ... they are not ready to listen at all.
Baba: We should check the power of purity and the power of knowledge in us. We should not point fingers at others. If the world does not understand, then is it our weakness or should we look at the weakness of the world? It is our own weakness.
Student: [They say:]: what kind of knowledge you narrate! *Kaliyug* (the Iron Age) has not yet started.
Baba: If they are asked: these atom bombs did not exist 70 years ago. How did they emerge now? Then they become silent. You should put the right question at the right time. (Concluded.)

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info